छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) क्षत्रियों की गौरवगाथा भोजराज से जगदेव तक और 36 कुल पंवार(पोवार)

(हर 36 कुल पंवार(पोवार) व्यक्ति को जानने योग्य आवश्यक तथ्य)

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज भारतीय क्षत्रिय परंपरा का वह स्वर्णिम अध्याय है, जिसमें वीरता, धर्मरक्षा और सांस्कृतिक चेतना की दिव्य ज्योति युगों से प्रज्वलित होती रही है। यह समाज राजा भोज और जगदेव पंवार जैसे यशस्वी शासकों की जन्मभूमि रहा है, जिन्होंने धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु अपने जीवन का बलिदान दिया। पंवार समाज केवल वंश परंपरा नहीं है, बल्कि एक जीवित संस्कृति

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज
है, जिसकी जड़ें गौरवशाली इतिहास में समाई हुई हैं और अपने प्राचीन छत्तीस कुलीन सामाजिक-सांस्कृतिक अस्तित्व को बचाये हुए है।

"भोजराजोऽथ जगदेवः, पोवाराः क्षत्रियाग्रगाः।
धर्मस्य रक्षणे युक्ताः, संस्कृतेः परिपालकाः॥
षट्त्रिंशत्कुलसम्भूताः, पौराणाः क्षत्रियर्षभाः।
युद्धे दक्षा, शौर्यनिष्ठा, जयिनो धर्मपन्थिनः॥"

इस गौरवगाथा को सार रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसमें स्पष्ट होता है कि पंवार समाज युद्ध कौशल, धार्मिक निष्ठा और सांस्कृतिक नेतृत्व में अग्रणी रहा है। राजा भोज जैसे विद्वान सम्राट ने केवल तलवार की शक्ति से नहीं, अपितु विद्या, वास्तुशास्त्र और धर्मशास्त्र के क्षेत्र में भी यश अर्जित

किया। वहीं, जगदेव पंवार ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए क्षत्रिय आत्मगौरव को अक्षुण्ण बनाए रखा। छत्तीस कुलीन परंपरा इस समाज की रीढ़ रही है, जिसने उसे संगठित, सशक्त और जागरूक बनाए रखा।

पंवार समाज की यह छत्तीस कुल परंपरा ऐतिहासिक रूप से भी प्रमाणित है। 'बीसलदेव रासो' में मालवा नरेश राजा भोज की पुत्री राजमती स्वयं को पंवार (पंमार) कहती हैं और अपने समाज के छत्तीस कुलों का उल्लेख करते हुए अपने पति शाकंभरी नरेश बीसलदेव (विग्रहराज) से वियोग का मार्मिक चित्रण करती हैं—

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज

"झुरई' सहोवर' रावं का। कुली छतीसइ झरइ सोही॥
धार भूरई राजा भोज सू'। सामखा राव सो पडयो विछोह॥"
(नरपति नाल्ह कृत बीसलदेव रासो)

इतिहासकार रसेल ने सन 1913 में अपनी पुस्तकों में सेंट्रल प्रोविंस के पंवार राजपूत कुलों का उल्लेख करते हुए यही 36 कुल सूचीबद्ध् किए हैं और स्पष्ट रूप से बताया कि इनके अतिरिक्त कोई अन्य कुल नहीं है। इसी प्रकार 1872 की ब्रिटिश एथेनॉलॉजिकल रिपोर्ट में भी हमारे पंवार समाज के यही कुल बताए गए हैं। सन 1892 में लिखित स्व. श्री लखारामजी तूरकर की किताब में भी समाज के दोहों में सिर्फ छत्तीस कुलों का ही उल्लेख मिलता है।

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज

स्व. पन्नालालजी बिसेन, जो अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा के पूर्व अध्यक्ष रहे, उन्होंने भी समाज के 36 कुलों को ही मान्यता दी है। सन 1998 में प्रकाशित "India's Communities" वॉल्यूम 6 के पृष्ठ 2839 पर प्रसिद्ध् मानवशास्त्री श्री के. एस. सिंह, जो Anthropological Survey of India के निदेशक थे, उन्होंने भी छत्तीस कुल क्षत्रिय पंवारों का विस्तार से उल्लेख किया है। रतलाम से जो भाट समाज के पुरखे हमारे साथ आए थे, उनके वंशज श्री बाबूलाल भाट की पोथियों में भी पंवार समाज के यही 36 कुल मिलते हैं।

हमारा 36 कुल क्षत्रिय पंवार समुदाय धारानगर, पश्चिम मालवा और राजपुताने से लगभग 1700 ई. के आसपास नगरधन पहुँचा और वहाँ से क्रमशः भंडारा,

गोंदिया, बालाघाट और सिवनी जैसे क्षेत्रों में जाकर बसा। इस दीर्घकालीन सहवास के कारण समाज की संस्कृति, बोली, पूजन-पद्धति, परंपरा, सामाजिक रीति-रिवाज, देवता और रक्तसंबंधों में अद्वितीय एकरूपता बनी रही। यही सांस्कृतिक एकरूपता आज भी छत्तीस कुल की विशिष्ट पहचान है।

हमारे समाज में केवल इन्हीं 36 कुलों के बीच ही विवाह होते थे। अन्य समाजों या अन्य कुलों से होने वाले विवाह को अंतर्जातीय माना जाता है। यह परंपरा आज भी समाज की पहचान और गरिमा बनाए रखने में सहायक है।

वर्तमान में मान्य हमारे विवाह योग्य सजातीय 36 कुल निम्नलिखित हैं–

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज

अम्बुले, कटरे, कोल्हे, गौतम, चौहान, चौधरी, जैतवार, ठाकुर या ठाकरे, टेंभरे, तुरकर, पटले, परिहार, पारधी, पुन्ड, बघेले, बिसेन, बोपचे, भगत, भैरम, भोयर, एडे या येड़े, राणा, रहांगडाले, रिनायत, शरणागत, सहारे, सोनवाने, हनवत, हरिणखेडे, क्षीरसागर, डाला

इनके अतिरिक्त, रणमत, फ़रीदाला, रजहांस, रंदीवा, रावत जैसे कुल हमारे समाज के नहीं माने जाते।vयह छत्तीस कुल परंपरा हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अस्मिता का मूल स्तंभ है, जिसे जानना, मानना और संरक्षित रखना प्रत्येक पंवार (पोवार) क्षत्रिय का कर्तव्य है।

पोवार(पंवार) अस्मिता संरक्षण समिति

छत्तीस कुल पंवार (पोवार) समाज
धार किला